

I strongly stress that the Union Government work strenuously towards the fulfillment of these demands at the earliest. Thank you.

DR. AMAR PATNAIK (Odisha): Sir, I associate myself with the Special Mention made by my colleague, Shri Sasmit Patra.

SHRI PRASHANTA NANDA (Odisha): Sir, I also associate myself with the Special Mention made by my colleague, Shri Sasmit Patra.

**Demand to restart excavation work of the Tilahak University at
Telhara village by ASI**

श्रीमती कहकशां परवीन (बिहार): महोदय, मैं अपने विशेष उल्लेख के द्वारा एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट कराना चाहती हूँ।

मान्यवर, बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय को कौन नहीं जानता! नालंदा जिला स्थित हिलसा अनुमंडल के एकंगर में तेलहारा ग्राम में तिलाहाक विश्वविद्यालय के टीले की खुदाई में मिली सामग्रियाँ यहाँ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती हैं। यहाँ सैकड़ों की संख्या में हिन्दू देवियों की मूर्तियाँ मिली हैं तथा भारी संख्या में बुद्ध की मूर्तियाँ-अभिलेख मिले हैं। कोलकाता विश्वविद्यालय के पालि भाषा के प्रोफेसर डॉ. सान्याल के अनुसार यह विश्वविद्यालय, तिलाहाक विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय से भी पुराना है। ऐसी मान्यता है कि यह नालंदा विश्वविद्यालय से भी 453 वर्ष पुराना है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी यहाँ रह कर अध्ययन किया था। इसकी महत्ता को देखते हुए नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष अरविंद पनगढ़िया, नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. अमर्त्य सेन, नालंदा डीम्ड विश्वविद्यालय के VC वैद्यनाथ लाभ जैसे महत्वपूर्ण लोग यहाँ आये थे। महोदय, लेकिन यह दुख की बात है कि इतने महत्वपूर्ण स्थल की खुदाई 2015 के बाद से बन्द है। खुदाई को शुरू करने पर महत्वपूर्ण जानकारियाँ बाहर आयेंगी। देश-विदेश से पर्यटक-इतिहासकार देखने आयेंगे।

इसलिए आपके माध्यम से सरकार से मेरा अनुरोध है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा इस स्थल की खुदाई दोबारा आरम्भ कर संरक्षण की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। बहुत-बहुत शुक्रिया।

†محترمہ کہکشاں پروین (بہار): مہودے، میں اپنے ویشیش الیکھ کے ذریعے ایک بہت ہی اہم وشنے کی اور سرکار کا دھیان آکرشت کرانا چاہتی ہوں۔

†Transliteration in Urdu script.

مانیور، بہار کے نالندہ وشوودھیالیہ کو کون نہیں جانتا! نالندہ ضلع، واقع ہلسہ انومنڈل کے ایکنگر میں تلہارہ گرام میں تلاباک وشوودھیالیہ کے ٹیلے کی کھدائی میں ملی سامگری یہاں کی اسمردھہ سانسکرتک وراثت کو درشتا ہے۔ یہاں سینکڑوں کی تعداد میں بندو دیویوں کی مورتیاں ملی ہیں اور بہاری تعداد میں بدھ کی مورتیاں ابھلیکھ ملے ہیں۔ کولکاتہ وشوودھیالیہ کے پالی بھاشن کے پروفیسر ڈاکٹر سانیاں کے مطابق یہ وشوودھیالہ تلاباک وشوودھیالیہ، نالندہ یونیورسٹی سے بھی پرانا ہے۔ ایسی روایت ہے کہ یہ نالندہ یونیورسٹی سے بھی 453 سال پرانا ہے۔ چینی مسافر ہیونگ سانگ نے بھی یہاں رہ کر ادھین کیا تھا۔ اس کی اہمیت کو دیکھتے ہوئے نینی آیوگ کے سابق ابادھیکش اروند پنکڑیا نوبل انعام یافتہ ڈاکٹر امرتیہ سین، نالندہ ڈیمڈ وشوودھیالیہ کے وی۔سی۔ ویدھناتھہ لابھہ جیسے اہم لوگ یہاں آئے تھے۔ مہودے، لیکن یہ دکھ کی بات ہے کہ اتنی اہم جگہ کی کھدائی 2015 کے بعد سے بند ہے۔ کھدائی کو شروع کرنے پر اہم جانکاریاں باہر آئیں گی۔ دیش-ودیش سے سیاح-تاریخ داں دیکھنے آئیں گے۔

اس لئے آپ کے مادھیم سے سرکار سے میرا انورودھہ ہے کہ بھارتیہ پرائیوٹ سرویکشن اور کلا و سنسکرت وبھاگ کے ذریعے اس جگہ کی کھدائی دوبارہ شروع کر کے سنرکشن کی ویوسٹھا بھی سنشچیت کی جائے۔ بہت بہت شکریہ۔

(ختم شد)

श्री सभापति: आपने तो इसे मगध एक्सप्रेस की स्पीड से पढ़ दिया।

डा. सोनल मानसिंह (नाम निर्देशित): महोदय, मैं स्वयं को इस विशेष उल्लेख से सम्बद्ध करती हूँ।

Demand to speed up work on Narkatiaganj-Bhiknathori railway line in Bihar

श्री सतीश चंद्र दुबे (बिहार): आदरणीय सभापति महोदय, मैं आपकी अनुमति से एक अत्यन्त लोक महत्व के विषय पर सदन सहित आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ। महोदय, यह बिहार प्रदेश में पश्चिमी चम्पारण जिले (जो कि मेरा गृह जिला भी है) के नरकटियागंज-भिक्षनाठोरी रेल खंड (जिसकी लम्बाई 42 किलोमीटर है) के विषय में है।

माननीय सभापति महोदय, इस रेल खंड पर पहले छोटी लाइन की रेलगाड़ियों का परिचालन हुआ करता था। वर्ष 2004 में इस रेल खंड का अमान परिवर्तन करने का प्रस्ताव पास हुआ,